बाप समान बनने के लिए निःस्वार्थ और निर-इच्छुक बनकर तपस्या करो

आज बापदादा के पास अपनी दादियों और आप सबका याद-प्यार और समाचार लेकर वतन में पहुँची, तो सामने से ही बापदादा ने रूहानी नयनों द्वारा मिलन मनाया और अपने होली हस्तों द्वारा, आओ बच्ची, आओ बच्ची कह कर बुलाया। मैं भी दिलाराम के दिल के स्नेह के सागर में समाने का अनुभव करके समा गई। कुछ समय तो उसी मिलन में मगन के अनुभव में थी।

बाद में बाबा बोले, बच्ची आज क्या समाचार लायी हो? मैं बोली आज देश-विदेश दोनों का समाचार लायी हूँ। अपने भारत में तो सभी ब्राह्मणों में अभी योग-तपस्या का बहुत उमंग है। सभी बहुत रुचि से अखण्ड योग, 16 घण्टे का योग कर रहे हैं। सब सेन्टर्स पर अच्छा वायुमण्डल है। मधुबन में भी सेवाओं के साथ-साथ तपस्या के प्रोग्राम भी बहुत अच्छे चल रहे हैं। विदेश

में भी तपस्या के साथ दादी जानकी को भिन्न-भिन्न कार्य के बड़े प्रोग्राम्स मिल रहे हैं। अभी भी एक धर्म नेताओं के संगठन में 'मिलेनियम वर्ल्ड पीस सम्मिट' के तरफ से निमन्त्रण मिला है, जिसमें सिर्फ धर्म नेतायें ही होंगे (प्रतिनिधि नहीं)। बापदादा बोले, बच्ची समय अनुसार अब धीरे-धीरे प्रत्यक्षता का रूप प्रत्यक्ष हो रहा है। जैसे एक तरफ बॉम्बे में गवर्मेन्ट ने दिल से ऑफर की है, दूसरे तरफ धर्म नेतायें भी स्वयं ही निमन्त्रण दे रहे हैं। साथ में भिन्न-भिन्न वर्ग जैसे एज्यूकेशन वाले और सब कहते हैं कि आध्यात्मिकता का कार्य ब्रह्माकुमारियाँ ही सही रूप से कर सकती हैं। इसी रीति से सन शोज़ फादर का पर्दा खुलना शुरू हुआ है। सब तरफ देश-विदेश में अब यह मानते हैं कि इन्हों का कार्य, सिस्टम प्रमाण बहुत अच्छा है। ऐसे कहते ही बापदादा बहुत गम्भीर रूप में ऐसे लगे जैसे कोई गुह्य बातों के विचार में खो गये हैं। मैं भी देखती रही। कुछ समय के बाद मैं बोली बाबा आप कहाँ चले गये थे? बाबा बहुत राज़युक्त मुस्कराये और बहुत धीरे-धीरे बोले, बापदादा अभी-अभी दो बातें देख रहे थे - एक तरफ सेवाओं की प्रत्यक्षता का पार्ट खुल रहा है। दूसरे तरफ बच्चों के तरफ देख रहे थे कि सेवा में निमित्त बने हुए बच्चों में बाप समान सम्पन्न बनने की विशेषतायें कहाँ तक प्रत्यक्ष हुई हैं क्योंकि बच्चों में बाप समान बनने की स्थिति प्रत्यक्ष होने से प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजता है लेकिन अभी तक बाप देख रहे हैं कि बाप समान बनने में अभी अन्तर है, यह समानता ही समाप्ति का आधार है। मैंने देखा आज तो बापदादा को बहुत डीप सोच चल रहा था। मैंने कहा बाबा इसका मूल कारण क्या है जो सब चाहते भी हैं फिर भी समान बनने में अन्तर रहता है? बापदादा मीठा मुस्कराये और बोले, बच्ची क्या सुनाऊं यह तो गुड़ जाने गुड़ की गोथरी जाने, बहुत सूक्ष्म बातें हैं। मैं बोली बाबा आखिर ठीक तो होना ही है, बाबा बोले बनना तो है और बनाना भी इन बच्चों को ही है। तपस्या तो अच्छी कर रहे हैं लेकिन तपस्या में बाप से लगन है, प्यार है, लेकिन तपस्या अग्नि रूप नहीं बनी है, ज्वाला रूप नहीं बनी है। इसलिए कई बच्चों में अब तक

सेवा का अभिमान, बुद्धि का अभिमान, विशेषताओं का अभिमान, मैं-पन का अभिमान..... यह भिन्न-भिन्न रॉयल रूप में समाया हुआ है। सेवा अच्छी करते हैं लेकिन सेवा भाव में भिन्न-भिन्न देह-अभिमान का रूप मिक्स हो जाता है, उसको पहचानते नहीं हैं। अपने को राइट समझते हैं। यह तो मेरा होना ही चाहिए, मिलना ही चाहिए, यह सूक्ष्म रॉयल इच्छा, अच्छा और समान बनने नहीं देती। बाप समान नि:स्वार्थ, निर-इच्छुक बनने में विघ्न डालती है। इस बात को स्वयं महसूस भी नहीं कर पा रहे हैं। इस कारण ही आवाज़ बुलन्द नहीं फैलता है, रुका हुआ है।

बापदादा देश-विदेश के सर्व बच्चों को कहते अपने को आपे ही सूक्ष्म चेक करो और चेन्ज करो, तो दु:ख अशान्तिमय दुनिया भी चेन्ज हो जायेगी। उसके बाद बाबा ने आज विशेष डबल फारेनर्स को याद किया और बड़े स्नेह रूप से बोले देखो, यह ब्रह्मा बाप की अव्यक्त फरिश्ते रूप की रचना बहुत प्यारी लगती है। बापदादा से दिल का प्यार अच्छा है, बापदादा भी बच्चों को सदा फरिश्ते समान उड़ती कला में ही देखते हैं इसलिए बहुत करके बच्चे गिफ्ट भी हार्ट या फरिश्ते रूप का ही भेजते हैं। सेवा का उमंग-उत्साह भी अच्छा है। वृद्धि भी अच्छी है। बापदादा हरेक निमित्त बच्चों को सेवा की मुबारक देते हैं।

बापदादा सर्व बच्चों को कहते हैं सदा स्वमान की सीट पर सेट रहो तो माया अपसेट नहीं करेगी क्योंकि आजकल माया भिन्न-भिन्न रूप से अपना प्रभाव डाल अपना बना लेती है लेकिन हे मेरे दिल तख्तनशीन स्वमान के तिलकधारी बच्चे, सदा अयोग्य बातों से, अयोग्य स्वभाव-संस्कार से व अयोग्य सम्पर्क-व्यवहार के प्रभाव से न्यारे और बाप के प्यारे रहना है। सी फ़ादर करते उड़ते चलो, उड़ाते चलो, हर समय सफलता स्वरूप अनुभव करो। बापदादा की छत्रछाया तो सदा साथ है। ऐसे कहते बापदादा के आगे सर्व डबल विदेशी बच्चे इमर्ज थे। और बाबा हर एक को चारों तरफ ऐसी मीठी-मीठी स्नेह और शक्ति भरी दृष्टि दे रहे थे। वह दृश्य तो देखने और

अनुभव करने वाला था। बोलो, सर्व डबल विदेशी अभी-अभी उसी उड़ने वाली रूहानी प्यारी दृष्टि का अनुभव कर रहे हो ना ? उसके बाद बाबा ने सर्व भारतवासी बच्चों को भी बहुत-बहुत याद-प्यार दिया और बोले हर बच्चा बाप के नयनों का नूर है। बच्चे ही बाप का संसार हैं, उसके बाद दोनों दादियों और साथियों को बाबा ने याद किया और बोले बाप बच्चों की सेवा पर बलिहार है। ओम् शान्ति।